।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

अमृत वचन

पैसा वो ठीक है जो आपकी रक्षा कर सके। वो पैसा ठीक नहीं जिसकी रक्षा आपको करनी पड़े।।

वर्ष ३१, अंक ६ एक प्रति : २ रुपये

सोमवार २८ जनवरी, २००८ से ३ फरवरी, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६४ दयानन्दाब्द : १८४

सष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ वार्षिक : १०० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास के पाठ्यक्रम में वेद एवं श्रीराम पर आपत्तिजनक टिप्पणियों के विरोध में

दिल्ली विश्वविद्यालय के नार्थ कैम्पस में विरोध प्रदर्शन

आर्यवीर दल, आर्यवीरांगना दल के कार्यकर्ताओं ने भारी संख्या में भाग लिया

दिल्ली विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तकों में वेदों और राम के बारे में पढ़ाए जा रहे मिथ्या और भ्रांतिजनक विषयों के विरोध में २६ जनवरी को दिल्ली विश्वविद्यालय के नार्थ कैम्पस में प्रदर्शन किया। विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर (नार्थ कैम्पस) के आर्ट फैकल्टी में हुए इस भारी विरोध प्रदर्शन में आर्य समाज के साथ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, शिक्षा बाचाओं आन्दोलन, नेशनल डेमोक्रेटिक टीचर्स फोरम के प्रौफसर तथा अन्य सगठनों के लोग भारी संख्या में उपस्थित थे।

विद्यार्थियों के सम्बोधित करते हुए आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा की वेदों में जहाँ एक ओर नारियों को पूजने की बात कहीं है, वहीं दूसरी ओर वेद नारियों की तुलना शुद्रों और पशुओं से कैसे कर सकता है?

ज्ञात हो कि दिल्ली विश्वविद्यालय की बी.ए. प्रोग्राम फाउंडेशन कोर्स की "Human Rights Gender and Environment" written by Bijoy Laxmi Nanda पुस्तक में Gender Culture and History पाठ के अर्न्तगत वेदों के बारे में भिन्न–भिन्न असंगत बातों को पढ़ाया जा रहा हैं जिसमें से कुछ हैं जैसें –

– शेष पष्ठ २ पर

दिल्ली विश्वविद्यालय में वेद पर संगोष्ठी

इस विषय पर विचार विनमय के लिए एक सगोष्ठी को आयोजन दिल्ली विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर (नार्थ कैंम्पस) के **आर्ट फैंकल्टी हॉल न. २२ में ५ फरवरी, २००८ दोपहर २.०० बजे** किया गया हैं। मुख्य वक्ता आचार्य धर्मपाल आर्य, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य होंगे। संगोष्ठी में भाग लेने के लिए श्री सुन्दर आर्य ९८९९००८०५४ से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

18वां विश्व पुस्तक मेले : प्रगति मैदान में

2 फरवरी से 10 फरवरी, 2008

वैदिक साहित्य प्रचार–प्रसार स्टाल

हॉल नं. 12ए स्टाल नं. 74

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में स्टाल पर पधारकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अन्यों को भी स्टाल पर आने के लिए प्रेरित करें। समयदानी कार्यकर्ता कृपया आने से पूर्व 9350502175 अथवा 9868242404 पर सम्पर्क करें।

-: निवेदक :-

वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार समिति, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती एवं गणतन्त्र दिवस के अवसर पर

एक शाम – आओ करें शहीदों को प्रणाम

शनिवार २६ जनवरी को आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस एवं दल का स्थापना दिवस समारोह ***'एक शाम - आओ करें शहीदों को प्रणाम'*** आर्यसमाज मिण्टो रोड, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से आचार्य सोमदेव तथा आचार्य भद्रकाम वर्णी द्वारा हुआ, जिसमें आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य जी सपत्नीक, श्री बजेश जी सपत्नीक तथा श्री मनोज सपत्नीक यजमान उपस्थित थे।

यज्ञ के उपरान्त आर्य वीरों द्वारा कविताओं व गीतों का कार्यक्रम शुरू हुआ, जिसमें सर्वप्रथम आर्य वीर अमित शुक्ला ने मधुर गीत प्रस्तुत किया तथा उनके एक अन्य गीत ***'ओ मां तू कितनी अच्छी है, तू कितनी प्यारी है, तू कितनी भोली है'*** ने तो उपस्थित जनों को भाव–विभोर कर दिया। उसके बाद श्री अतुल की कविता, जहांगीरपुरी की वीरांगनाओं का समूह गान, श्री जीतेन्द्र जी (आर्य समाज कीर्तिनगर) के निर्देशन में नत्य नाटिका

— शेष पष्ठ २ पर

गतांक से आगे

जब पं० गुरुदत्त के हृदय में आस्तिकता जागी

211

– स्व० स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

परन्तु भक्त जनों की आशाएं क्षण क्षण में निराशा निशा में लीन हो रही थीं। उनके उत्साह की कोमल कलियों के सुकोमल अंग पल पल में भंग हुए चले जाते थे। वे गुरुदेव की दैवी देह के देव–दुर्लभ दर्शन पा तो रहे थे; परन्तु उनकी आँखों के आगे रह रह कर आँसुओं की बदलियाँ आ जाती थीं। रुलाई का कुहरा छा जाता था। सर्वत्र निविड़ तमोराशि का राज्य दिखाई देने लगता था। वे जी को कड़ा किए कलेजा पकड़ कर खड़े तो थे; परन्तु खोखले पेड़ और भुने हुए दानों की भांति, मानों सत्व रहित थे।

ऐसी दशा ही में सायंकाल के पाँच बजने लगे। उस समय एक भक्त ने पूछा कि भगवान् आपकी प्रकति कैसी है? श्री महाराज ने उत्तर दिया कि अच्छी है; प्रकाश और अन्धकार का भाव है। इन्हीं बातों में जब साढ़े पाँच बजे तो महाराज ने सब द्वार खुलवा दिए। भक्तों को अपनी पीठ के पीछे खड़े होने का आदेश किया। फिर पूछा कि आज पक्ष, तिथि और वार कौन सा है। पण्डया मोहन लाल ने शिरोनत होकर निवेदन किया कि प्रभो, कार्तिक कष्ण पक्ष का पर्यवसान और शुक्ल का प्रारम्भ है। अमावस्या और मंगलवार है।

तत्पश्चात् महाराज ने अपनी दिव्य दष्टि को उस कोठरी के चहुं ओर घुमाया और फिर गम्भीर ध्वनि से वेदपाठ करना आरम्भ कर दिया। उस समय उनके गले में, उनके स्वर में, उनके उच्चारण में, उनकी ध्वनि में, उनके शब्दों में किचिम्मात्र भी निर्बलता प्रतीत नहीं होती थी।

भगवान् के होनहार भक्त, पण्डित श्री गुरुदत्तजी उस कमरे के एक कोने में भित्ति के साथ लगे हुए, भगवान् की भौतिक दशा के अन्त का अवलोकन कर रहे थे। टकटकी लगाए निर्निमेष नेत्रों से उनकी ओर देख रहे थे।

पण्डित महाशय उस धर्मावतार के दर्शन करने पहले पहल ही आए थे। उनके अन्तःकरण में अभी आत्म–तत्व का अंकुर पूर्ण–रूप से नहीं निकल पाया था। परन्तु श्री महाराज की अन्तिम दशा को देखकर वे अपार आश्चर्य से चकित हो गए। वे चौकसाई विचार से देख रहे थे कि मरणासन्न महात्मा के तन पर अनगणित छाले फूट निकले हैं। उनको विषम वेदना व्यथित किए जाती है। उनकी देह को दावानल सदश दाह ज्वाला एक प्रकार से दग्ध कर रही है। प्राणान्तकारी पीड़ा उनके सम्मुख उपस्थित है। परन्तु महात्मा शान्त बैठे हैं दुःख क्लेश का नाम निर्देश तक नहीं करते। उलटे गम्भीर गर्जना से वेद–मन्त्र गा रहे हैं। उनका मुख प्रसन्न है। आंखें कमल सदश खिल रही हैं उनका विमल भाल अद्भुत आभा से चन्द्रमा के सदश चमक रहा है। व्याधि मानों उनके लिए त्रिलोकी में त्रयकाल, उत्पन्न ही नहीं हुई। यह सहनशीलता शरीर की सर्वथा नहीं है। अवश्यमेव यह इनका आत्मिक बल है।

यह पहला पल था कि जिस में महर्षि की मत्यु की अवस्था देखकर श्री गुरुदत्त ऐसे धुरन्धर नास्तिक के हृदय की उपजाऊ भूमि में आत्मिक जीवन की जड़ लग गई। इन भावों की विद्युत–रेखा चमकते ही वे सहसा चौंक पड़े। उन्होंने क्या देखा कि एक ओर तो परम धाम को पधारने के लिए प्रभु परमहंस पलंग पर बैठे प्रार्थना कर रहे हैं और दूसरी ओर वेद व्याख्यान देने के वेश में सुसज्जित, उसी कमरे की छत के साथ लगे बैठे हैं। इस आत्म योग के प्रत्यक्ष प्रमाण को पाकर पण्डित महाशय का चित्त स्फटिक, आस्तिक भाव की प्रभा से चमचमा उठा। मानों एक ओर से निकलती हुई ज्योति उनकी देह के दीप में प्रवेश कर गई।

गुरुदत्त अपने गुप्त रीति से आत्मदाता गुरुदेव को फिर अतिशय श्रद्धा से देखने लगे। भगवान् वेद गान के अनन्तर, परम प्रीति से पुलकित अंग होकर, संस्कत शब्दों में परमात्मदेव की प्रार्थना करने लगे। फिर आर्यभाषा में ईश्वर गुण गाते भक्तों की परम गति भगवती गायत्री को जपने लगे। उस महामन्त्र के पुण्यपाठ को करते करते मौन हो गए। ओर चिरकालतक सुवर्णमयी मूर्ति की भांति निश्चल रूप से समाधिस्थ बैठे रहे। उस समय उनके स्वर्गीय मुख मण्डल के चारों ओर सुप्रसन्नता प्रभात की झलमलाहट पूर्ण रूप से झलमल कर रही थी।

– 'श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश' से

क्रमशः

प्रथम पृष्ठ का शेष

❑ पष्ठ २०७ ऋग्वेद में नारियों का स्थान शुद्रों और कुत्तों के समान हैं ।
❑ पष्ठ १८३/१८४ वेद समलैंगिकता का समर्थन करतें हैं तथा
❑ सम्पूर्ण पुस्तक के अर्थ में वैदिक संस्कति नारी जाति का तिरस्कार करती हैं आदि।

श्री धर्मपाल आर्य ने आगे बोलते हुए कहा कि वेदों के सही रूप को जाने-समझे बिना लिखी गई इस प्रकार की बातें वास्तव में चिन्ताजनक हैं तथा आर्यसमाज इस प्रकार की किसी भी झूठी बात को दिल्ली अथवा देश के किसी भी विश्वविद्यालय में पढ़ाए जाने का विरोध करता हैं। सभा को अपने विचारों से अवगत कराते हुए श्री सुन्दर आर्य ने कहा कि वेद देश तथा दुनिया का गौरव है, दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाए जाने वाले ये भ्रान्तिजनक विचार देश की युवा पीढ़ी को गुमराह करते हैं तथा उनमें आत्म–गौरव के स्थान पर आत्महीनता का आभास कराते हैं।

इसके साथ ही बी.ए. (आनर्स) द्वितीय वर्ष की इतिहास की पुस्तक में राम एवं हनुमान पर की गई भ्रान्तिजनक टिप्पणीयो पर भी आर्य समाज ने भारी रोष व्यक्त किया। ज्ञात रहे कि इस पुस्तक में तीन सौ रामायण नामक विषय के अर्न्तगत जहॉं एक ओर राम के तीन सौ से अधिक रूपों को पढ़ाया जा रहा है हीं

दिल्ली विश्वविद्यालय पर प्रदर्शन

हनुमान को मुस्टंडा तथा छोटे बन्दर की संज्ञा दी जा रही हैं साथ ही लेखक सीता को रावण की बेटी तथा लक्षण एवं हनुमान के साथ उसके अवैध संम्बधों को भी बताता है।

विरोध प्रर्दशन में आयें हुऐं अन्य सगठ़नों के प्रमुखों ने इन सभी आपत्तिजनक विषयों को कोर्स से तुरन्त निकलवानें की मॉग की। विरोध प्रर्दशन का स्वरूप सभा से पदयात्र के रूप में परिवर्तित हुआ तथा इतिहास विभाग ने ज्ञापन देने तथा प्रर्दशन के बाद सभी उपकुलपति दिल्ली विश्वविद्यालय दीपक पेंन्टल के कार्यालय पर जमा हुऐं तथा जमकर हुई नारेंबाजी एवं विरोध के द्वारा इन विषयों को कोर्स से तुरन्त हटानें की मॉग की गई।

विभिन्न संगठनों के सम्मलित प्रतिनिधि मंडल को दिये गये अपने आश्वासन में उपकुलपति कार्यालय ने कहा कि अगलें एक सप्ताह में इस विषय पर एक कमेटी का गठन किया जायेंगा तथा निश्चित कदम उठायें जायेगें। उपकुलपति कार्यालय को अवगत कराया गया कि यदि इस दिशा में ठोस कदम निश्चित समयावधि में नहीं लिये गयें तो इससें भी बडा विरोध प्रर्दशन सारे देश में किया जायेगा।

इस विरोध प्रर्दशन में आर्य समाज आर्य वीर दल तथा आर्यवीरांगना दल के मुख्य अधिकारी उपस्थित थे। ❑

प्रथम पृष्ठ का शेष

'हम करें राष्ट्र आराधन' ने भी समा बांध दिया। इस नत्य नाटिका की जो सबको आश्चर्यचकित करने वाली बात थी वह थी कि सभी आर्यवीर इस ठिठुरन भरी सर्दी में नंगे बदन प्रस्तुति कर रहे थे। इसके बाद डॉ० कर्णदेव शास्त्री धर्माचार्य आर्य समाज हनुमान रोड के ४ वर्षीय दोहत्रे दिव्यांशु ने बड़े आत्मविश्वास के साथ एक कविता सुनाई जिसकी समस्त जनसमूह ने भूरि–भूरि प्रशंसा की। एक अन्य बालक जिसका नाम अरूषम आर्य (त्रीनगर) था, कविता प्रस्तुत की 'छोटे–छोटे पाव अपने'। इसके बाद श्री अतुल व श्री हरीश जी की कविता 'मेरा मुल्क मेरा देश' को भी लोगों ने खूब सराहा। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य जी ने भी एक ईश्वर भक्ति का एक गीत ***'जरा रखना भरोसा' भगवान में'*** प्रस्तुत किया। इसके बाद जहांगीरपुरी के श्री उमाशंकर का गणतंत्र दिवस पर संक्षिप्त वक्तव्य तथा आर्य वीरांगना दल की मंत्राणी सुश्री विभा आर्या का ओजपूर्ण व प्रेरणादायक गीत '***हम भारत के आर्य सिपाही आगे बढ़ते जाएंगे, हम अंगारों पर चल कर भी मुस्कराएंगे***' ने भी उपस्थित जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके पश्चात आर्यवीर प्रतुल आर्य ने कविता प्रस्तुत की।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि पराधीनता की

एक शाम – आओ करें .....

बलिवेदी पर असंख्य देशभक्तों ने अपने सर्वस्व लुटा कर हमें सुखद आजादी का एहसास कराया। हमें शहीदों के आदर्शों के अनुरूप चलकर आतंकवाद, भ्रष्टाचार व आडम्बरमुक्त भार बनाना है। उन्होंने इस अवसर पर आर्यवीरों को राष्ट्र रक्षा की शपथ भी दिलवाई।

आर्यवीर दल के संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य ने बताया कि २६ जनवरी को आर्यवीर दल के स्थापना दिवस पर दिल्ली की आर्यवीर दल की विभिन्न शाखाएं अपने क्षेत्र में राष्ट्रीय गीतों, भजनों, भाषणों एवं नाटकों के माध्यम से अमर शहीदों को स्मरण करते हैं तथा श्रद्धांजलि दअपिर्तत करेत ें।

इस अवसर पर बोलते हुए आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के संरक्षक श्री रामजी लाल आर्य ने कहा कि आर्यवीर दल देश की रक्षा के लिए अन्य आपदाओं में तथा विषम परिस्थितियों में सदैव आगे रहता है। इस अवसर पर सभी बच्चों को जिन्होंने कुछ भी सुनाया उसे, श्री बलदेवराज सेठ ने एक सौ रुपये इनाम के तौर पर प्रदान कर उत्साहवर्धन किया।

मंच का कुशल संचालन आर्यवीर सुन्दर आर्य ने किया, जिनका वहां सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर आर्यवीर दल से जुड़े महानुभावों का टोपी पहनाकर सम्मान किया गया। इस प्रकार यह समारोह अत्यन्त ही सफल रहा। ❑

मनुष्य का ईश्वर के प्रति कर्त्तव्य

मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कति है। जन्म-जन्मान्तरों के संचित पुण्य-कर्मों के फलस्वरूप मनुष्य शरीर की प्राप्ति होती है। मनुष्य बहुत सौभाग्यशाली है कि उसे कर्मयोनि मिली है, जबकि अन्य सभी योनियां भोगयोनियां हैं। कर्मयोनि में होने के कारण मनुष्य शुभ कर्म करते हुए सौ वर्षों तक या उससे भी अधिक वर्षों तक जीने की इच्छा करे एवं ईश्वर के सानिध्य तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करे। मोक्ष–प्राप्ति के लिए अत्यधिक प्रयत्न एवं साधना की आवश्यकता है। यह कार्य समय सापेक्ष्य भी है, अतः 'संध्या' के मंत्रों में अदीन और स्वस्थ रहते हुए सौ या उससे भी अधिक वर्षों तक जीवित रहने की प्रार्थना की गयी है। साधना के लिए पर्याप्त समय, स्वस्थ शरीर एवं स्वतंत्र वातावरण की आवश्यकता है। इसीलिए ***'जीवेम शरदः शतम्'*** वाले मंत्र में इन तीनों की प्रार्थना एवं कामना की गयी है और इसके लिए पुरूषार्थ तो मनुष्य को स्वयं ही करना है।

'वैदिक संध्या' में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य के जिन तीन कर्तव्यों का उल्लेख किया है, उनमें से अन्तिम है कि मनुष्य का ईश्वर के मनुष्य का परम कर्तव्य है। जिस परम पिता परमेश्वर ने श्वांस लेने के लिए हमें शीतल मन्द सुगन्धित पवन दी है, प्रकाश करने वाले सूर्य-चन्द्रमा दिये हैं और इसके लिए हमसे कोई शुल्क नहीं ले रहा है, जिस सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने हमें नदियों का स्वच्छ जल,पेड़–पौधों की हरियाली, वनस्पति जगत्, नाना प्रकार के फल एवं खाद्य सामग्री तथा जीवन की अन्यान्य सुख–सुविधाएं प्रदान की हैं, उस प्रभु के प्रति धन्यवाद न करना मनुष्य की कतध्नता होगी। जिस परमेश्वर ने हमें इतना कुछ दिया है, उसके प्रति हमारा भी कुछ कर्तव्य बनता है। ईश्वर का मनुष्य पर बहुत उपकार है, उसने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है, पर मनुष्य ने तो ईश्वर के प्रति ठीक से कतज्ञता भी व्यक्त नहीं की है। क्या यह उचित है? नहीं न। यहां यह प्रश्न स्वाभाविक ही है कि मनुष्य ईश्वर के सम्बन्ध में क्या करे? इस प्रश्न का समाधान वैदिक 'संध्या' के 'उपस्थान' मंत्रों एवं 'नमस्कार' मंत्र में किया गया है। उपस्थान या उपासना का अर्थ है कि ईश्वर के समीप होना, ईश्वर की निकटता प्राप्त करना। ईश्वर के प्रति कतज्ञता प्रकट करने के लिए मनुष्य हमें इसकी अपने कल्याण के लिए आवश्यकता है, अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिए जरूरत है।

मनुष्य के जीवन का अन्तिम लक्ष्य है मोक्ष की प्राप्ति, ईश्वर की निकटता प्राप्त करना और उसी का उपाय उपस्थान मंत्रों में बताया गया है। मनुष्य अपूर्ण है और ईश्वर पूर्ण, मनुष्य गलतियों का पुतला है, वह जीवन में प्रायः गलतियां कर जाता है, किन्तु ईश्वर त्रुटिरहित है, वह कभी कोई गलती नहीं करता। मानव-जीवन का सर्वोत्तम आदर्श ईश्वर ही है, वही अनुकरणीय है, उसी के गुणों को हमें अपने जीवन में धारण करना है और जैसे-जैसे हम ईश्वरीय गुणों को अपने जीवन में धारण करते जाते हैं, वैसे-वैसे हमें उसकी निकटता प्राप्त होती जाती है। यदि हम ईश्वर के कुछ गुणों को भी पूरी तरह से आत्मसात कर लें, धारण कर लें तो हमारा जीवन धन्य और सार्थक हो जाए। 'उपस्थान' के पांच मंत्रों एवं नमस्कार मंत्र में ईश्वर के कुछ प्रमुख गुणों का उल्लेख किया गया है। वे गुण मनुष्यों के लिए आचरणीय हैं, विशेषकर उन साधकों के लिए जो ब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहते हैं, ईश्वर की समीपता और मोक्ष–प्राप्ति के इच्छुक हैं। 'उपस्थान' के पहले मंत्र में यह प्रार्थना की गयी है कि हम उस ईश्वर को उत्तम गुणों से प्राप्त करें, जो अविद्यान्धकार से रहित है, सुख स्वरूप है, प्रलय के पश्चात् भी रहने वाला है, दिव्य गुणयुक्त है, सर्वोत्तम है, ज्योति-स्वरूप है तथा चराचर जगत् को देख रहा है। समझने की बात यह है कि जिसप्रकार ईश्वर अविद्या के अन्धकार से रहित है, वैसे ही हम भी अज्ञानमुक्त होकर ज्ञानी बनें, अविद्या को छोड़कर ब्रह्म विद्या में प्रवत्त हों।

— शेष पष्ठ ६ पर

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (24)

— डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

<u>उपसंहारदर्शनान्नेति चेन्न क्षीरवद्धि।। २४।।</u>

आदि खाकर संकल्प मात्र से दूध स्रावित करने लगती है। वह अपने

प्रति क्या कर्तव्य है और उसकी पूर्ति कैसे हो सकती है? समझने की बात यह भी है कि जिस ईश्वर ने हमें मनुष्य का सुन्दर शरीर दिया है, ऐसा शरीर जिसका एक–एक अंग अमूल्य है और उन अंगों का निर्माण ईश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता, उस ईश्वर के प्रति कतज्ञ होना प्रत्येक को चाहिए कि वह उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करे तथा उसके गुणों को अपने भीतर धारण करे तभी वह परम पिता परमात्मा की निकटता प्राप्त कर सकता है। समझने की बात यह भी है कि ईश्वर को हमारी कतज्ञता की कोई आवश्यकता नहीं, हमारी स्तुति, प्रार्थनादि की कोई जरूरत नहीं, पर

बोध कथा

व्रत का अर्थ : वचन का पालन

– महात्मा आनन्द स्वामी

एक थी बूढ़ी माँ। उसके चार बेटे थे। एक दिन बूढ़ी माँ ने व्रत रखा। बड़े बेटे ने सोचा– ''माँ ने व्रत रखा है, उसके लिए कुछ भेजना चाहिए।' दो दर्जन चित्ती वाले केले उसने भेज दिये।

दूसरे पुत्र ने सोचा–''मां ने व्रत रखा है, अन्न तो वह खा नहीं सकती।' उसने डेढ़ सेर दूध भेज दिया।

तीसरे पुत्र ने सिंघाड़े के आटे से बने हुए एक सेर पकौड़े भेज दिये। चौथे ने फलों का एक टोकरा भेज दिया।

रात्रि में चारों पुत्र मां के पास पहुंचे तो बड़े लड़के ने कहा–''माँ तुझे दो दर्जन केले मैंने भेजे थे।''

माँ ने कहा– ''हाँ बेटा! वे मैने सब खा लिए, मेरा व्रत है न ! रोटी तो मैं खा नहीं सकती।''

दूसरे पुत्र ने कहा–'' माँ, मैंने डेढ़ सेर दूध भेजा था?''

माँ ने कहा–''हाँ पुत्र! वह मैंने सब पी लिया।''

तीसरे पुत्र ने कहा–''माँ मैंने पकोड़े भेजे थे?'' माँ बोली–हाँ बच्चा! अच्छे थे पकोड़े। मैंने खा लिए।

चौथे पुत्र ने कहा–''परन्तु माँ! फलों का वह टोकरा तो होगा, जो मैंने भेजा था?''

माँ बोली–''कहाँ बेटा! मैंने वह सारा टोकरा समाप्त कर दिया, मेरा व्रत जो था!''

बड़े बेटे ने यह बात सुनी तो दौड़ा हुआ मकान की छत पर पहुँचा और पुकार–पुकारकर कहले लगा–''ओ मुहल्ले वालो! अपने–अपने बच्चों को संभालकर रखना, हमारी माँ ने व्रत रखा हुआ है।''

नहीं, यह व्रत नहीं है। व्रत का अर्थ यह है कि जो वचन मैंने किया है, उसे जीवन–भर पूर्ण करूँ। व्रत का अर्थ भूखों मरना भी नहीं। ❑

अर्थ:- (उपसंहार दर्शनात्) साधनरूपी सामग्री के संग्रह के देखे जाने से (न) (ब्रह्म जगत् का कारण) नहीं है, (इतिचेत्) यदि ऐसा कहो तो (न) ठीक नहीं है (हि) क्योंकि (क्षीरत्) दूध के समान।

भावार्थ :- संसार में किसी निर्माण या रचना करने के लिए बहुत–से अन्य साधनों के संग्रह की आवश्यकता लोक में दिखायी देती है, इसके आधार पर ब्रह्म जगत् का कारण नहीं हो सकता, ऐसा कहना ठीक नहीं है, क्योंकि जैसे अकेली गाय से अन्य साधनों के बिना दूध स्रवित होने लगता है उसी तरह ब्रह्म एकमात्र उपादान प्रकति से जगत् की रचना कर सकता है। उसे प्रकति के अतिरिक्त किन्हीं अन्य साधनों की अपेक्षा नहीं होती। उसका सष्टि रचना का संकल्प ही सष्टि बनाने के लिए पर्याप्त है। ब्रह्म के संबंध में ऐतरेय उपनिषद् (१.१.२) में कहा है–

सईक्षत लोकान्नुसजाइति स इमॉल्लोकानसत।।

उसने ईक्षण अर्थात् संकल्प किया कि मैं लोंकों की रचना करूँ और उसने इन लोकों का निर्माण कर दिया। इससे संदेह हो सकता है कि बनाने के साधनों के बिना वह जगत की रचना करने में समर्थ होगा भी या नहीं?

इस सूत्र के आशय को स्पष्ट करने के लिए लौकिक उदाहरण दिया गया है। हम देखते हैं गाय घास–चारा बछड़े को दूध पीने के लिए आया हुआ देखकर संकल्प मात्र से दूध स्रावित करती है। इसके लिए उसे और किन्हीं साधनों के संग्रह की आवश्यता नहीं होती । ठीक इसी तरह ब्रह्म अपने संकल्प मात्र से प्रकति को जड़ जगत् के रूप में परिणत कर देता है। जहाँ तक कि कुम्हार आदि का घट निर्माण से संबंध है, वह अल्प शक्ति है इसलिए उसे मिट्टी (उपादान) के अतिरिक्त चाक, डण्डा, डोरी, पानी आदि अनेक साधनों की आवश्यकता होती है। ब्रह्म की शक्ति अदभुत और असीम है। उसके संबंध में श्वेताश्वतर उपनिषद् (६.८) में कहा है–

परास्य शक्ति र्विविद्यैव श्रयते स्वाभाविकी ज्ञान बाल कियाच।

इस ब्रह्म की विविध प्रकार की ज्ञान (सत्व) बल (तमस्) किया (रजस्) युक्त स्वाभाविक पराशक्ति प्रकति के रूप में विद्यमान है। यही स्वाभाविकी नित्य प्रकति साम्यावस्था में स्थित ब्रह्म के संकल्प से जगत् के रूप में परिणत हो जाती है।

– ब्रह्म अन्य साधनों के संग्रह के बिना कैसे जगत् की रचना करता है? सूत्रकार इस विषय में एक अन्य उदाहरण देते हैं।

– सी-२ए/६० जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

Question & Answer

What is Darshan Shastra?

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : Is it true that King Dashrath and Kaushalya got vardaan from Shri vishnu to be their son in all the yugs. Besides Treta yug as Shri Ram he was their son in Dwaper as Shri Krishan also? **Prakash Lakhani**

Ans.: No, please it is not true. Kaushlya did not get any vardaan (blessings) from Vishnu. There is only one formless, omnipresent, Almighty God who creates, nurses and destroys the universe. Yajurveda mantra 32/1 and Rigveda mantra 1/164/46 states that there are unlimited names of God based on His divine qualities but God is one. Yajurveda mantra 27/36 states -"Na Jatah Na Janishyate" that equivalent to the said one God, no other God was born and will never be born in future too. So we have to follow the Vedic path.

Q.: Did he promised Kekai also to be brought up by her in Dwaper yug? **Prakash Lakhani**

Ans.: No, please. Ram did not make such promise to Kekai, being impossible and against the Vedas and such statement is not available in true ancient holy books like Valmiki Ramayana, Upnishads, Six Shastras, Shathpath Brahmin Granth etc. However, I may mention here that learning of Vedas, shastras who are Rishi-Munis and perfect Yogi too, never consider Bhagwad Puraan etc., as a true Granth. Most of the statement mentioned therein, being against the Vedas, Yog shastra sutra 1/7 and Sankhya Shastra Sutra clearly state that Vedas are self-proof. So whatever is in Vedas, i.e., true and against the Vedas is false.

Q.: As the name suggest, Dwaper yug should have been before Treta yug. Is there any specific reason for this reversal of yug?

Prakash Lakhani

वाल्मीकि रामायणे जीवनदर्शनम्

गत अंकेन क्रमेषुः-

पिता हि भवति ज्येष्ठी धर्ममार्यस्य जानतः।
तस्य पादौ ग्रहीष्यामि स हीदानीं गतिर्मम।। २/५५/२०

भ्रातणामेतादशं परस्परमाकर्षणं परिवारस्य समाजस्य चाधारभूतम्। पितभ्रातभक्तिपरायणो भरतस्ताभ्यां विहीनं राज्यं नेच्छति मनागपि। राज्यं तणवत्तिस्कुर्वाणः स इत्थ व्याहरति –

किन्नु कार्यं हतस्येह मम राज्येन शोचतः।
विनीनस्याथ पित्रा च भ्राता पितस्मेन च।। २/५६/२

रामं वनाद् विनिवर्तयितुं भशं प्रयत्नपरोपि भरतो यदा न तत्र साफल्यमवाप तदा स रामस्य चरणपादुके शिरसि धारयित्वा चतुर्दशवर्षपर्यन्तं तपश्चरणप्रतिज्ञां जग्राह –

चतुर्दश हि वर्षाणि जटाचीरधरो ह्यहम्। फलमूलाशनो वीर भवेयं रघुनन्दन।। तवागमनाकांक्षन् वसन्वै नगराद् वाहिः। तव पादुकयोर्न्यस्य राजतन्त्रं परन्तप।। चतुर्दशे हि सम्पूर्णे वर्षेहनि रघूत्तम। न द्रक्ष्यामि यदि त्वां तु प्रवेक्ष्यामि हुताशनम्।। २/१८/१८, १६, २०

वाल्मीकिमते धर्मस्य आचरणम्, संस्कते संरक्षणम्, मर्यादायाः पालनं चेत्यादयो मानवीयगुण एव सष्टेराधारभूताः। अत एव रामायणस्य पात्राणां चरित्रचित्रणे कविना तेषामेव गुणानां विकासः स्वतूलिकाया विषयीकतः। मर्यादापालको रामः अयोध्याया राज्यं स्वीकर्तुं भरतेन साग्रहमनुनीतोपि वसिष्ठादिभिश्च सुस्पष्टमादिष्टोपि स्वव्रतपालने हिमवतोप्यधिकमचलः। आतीयां दढतां स इत्थं घोषयति –

लक्ष्मीश्चन्द्रादपेयाद्वा हिमवान् वा हिमं त्यजेत्।
अतीयात्सागरो वेलां न प्रतिज्ञामहं पितुः।। २/७८/१३

कस्यापि वस्तुनः प्रलोभनं सत्यसन्ध रामं मर्यादापालनाद् रोद्धुं नालम्। सर्वथा अक्षुण्ण खलु रामस्य मर्यादा–

नैव लोभान्न मोहाद्वा न ह्यज्ञानात्तमोन्विताः।
सेतुं सत्यस्य भेत्स्यामि गुरोः सत्यप्रतिश्रवः।। २/७६/२३

– **क्रमशः**

सरल सत्यार्थ प्रकाश

Ans.: Shwetashvaropnishad shloka 6/8 states- (Swaabhaviki gyanbalkriya cha) i.e., knowledge, power and deeds of the Almighty God are natural i.e., automatic and take place at fixed time. So the periods Satyug etc., are eternal, unchangeable and natural and so is the creation. Where there is reason, that matter will be destroyed one day. So God, souls, Prakriti are without reason.

So Vishnu is also a name of formless, Almighty God based on quality. Quality is as under- "Vishnu" word is made from "Vishlari" dhatu and the sense of "Vishlari" is omnipresent. So He who has the quality of being omnipresent at all times without a second's break, He is Vishnu. So the name of Almighty God is Vishnu and no other Vishnu exists equivalent to this God. Similarly Brahma = "Vri Vridhau" i.e., the biggest amongst the universe. Naturally, He is Almighty God. So the name of Almighty God is also Brahma. Similarly,according to Yajurveda mantra 16/41. Shiv means He who is beneficial/causes welfare, is Shiv. The most beneficial, who creates and nurses the universe is Almighty God. So Shiv is also name of Almighty God. Similarly the said Ved mantra states the word "Shankar" which means, He who gives peace to all who worships Him. The name of God is "Shankar" as well. Without reason means no body has made the said thirty-four matters. For example-parents are the reason of child to be born but the above said thirty-four matters are without reason. That is why, those are eternal and immortal. Creation being eternal. Therefore, there is no reason for reversal of Yugas.

To be continued...

वेद–वाणी

साधना चैनल

हर रविवार सायं 6.55 बजे

रविवार 3 फरवरी, 2008

-: प्रवचन :-

आचार्य अखिलेश्वर जी

-: प्रसारण-सहयोगी :-

आर्यसमाज कीर्ति नगर

नई दिल्ली–110015 **एवं**

श्री धर्मपाल आर्य एवं परिवार

सुशील जनरल स्टोर

आर. जेड़ - ई- 140, निहाल विहार,

नई दिल्ली–110041

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

अष्टम समुल्लास : सष्टि की उत्पत्ति-प्रलय स्थिति

जिससे यह विविध सष्टि प्रकाशित हुई है, जो इसका धारण और प्रलय करता है, तथा जो इस जगत् का स्वामी है और जिसकी व्यापकता में यह सब जगत् का स्वामी है और जिसकी व्यापकता में यह सब जगत् उत्पत्ति स्थिति और प्रलय को प्राप्त होता है, वह परमात्मा ही है। उसको ही तुम सष्टिकर्ता जानो, अन्य को नहीं।

यह सब जगत सष्टि से पहिले अन्धकार से आवत्त रात्रि रूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप तथा अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एक देशी आच्छादित था, पश्चात परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारणरूप रचना से पहले इसका पति या स्वामी वह परमात्मा ही विद्यमान् था। एकमात्र वह ही जीव और जड़ से भिन्न रहकर इस सब भूत, भूविष्यत् एवं वर्तमान जगत् का निर्माण करने वाला है अर्थात् यह बढ़ई आदि की भांति इसका निर्माण तो करता है, किन्तु स्वयं इसमें लिप्त नहीं रहता।

इस प्रकार ईश्वर के अतिरिक्त जीवात्मा और प्रकति भी अनादि और अनन्त हैं। इन तीनों को ही इस सष्टि प्रक्रिया का कारण चाहिए। इनमें से परमात्मा इसका निमित्त कारण है, अर्थात् वह स्वयं बिना परिवर्तित हुए इस सब का निर्माण करने वाला है। प्रकति को 'उपादान कारण' कहना चाहिए, क्योंकि न तो उसके बिना कुछ बन सकता है, और वह स्वयं ही कुछ बनकर परिवर्तित होती हुई नये–नये रूप में सामने आती है। तीसरा 'साधारण कारण' कह सकते हैं, जो बनाने में साधन होता है, और साधारण निमित्त भी। इनमें से 'जीवात्मा' की स्थिति भी 'निमित्त कारण' के रूप में जीवात्मा ही इस ईश्वररचित सष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेकविध कार्यों की रचना करता है। उसे 'साधारण कारण' भी कह सकते हैं।

—: क्रमशः :—

साभार : सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

आर्यसन्देश - प्रथम अंक : प्रेरक व्यक्तित्व

लाला श्री बंसीधर जी अग्रवाल "सूत वाले"

जिन्होंने सुप्रीम कोर्ट में याचिका डालकर अपने अंगदान करने की अनुमति मांगी - अनुमति न मिलने पर मरणोपरान्त अपना सारा शरीर दान दिया

श्री बंसीधर अग्रवाल का जन्म विक्रम संवत १६७२ के ज्येष्ठ मास के कष्ण पक्ष में जून १६१५ में मथुरा में हुआ। स्व० पिता श्री गोपीनाथ गोयल तथा स्व० माता श्रीमती अंचीदेवी की वे ज्येष्ठ संतान थें। उनका शैशवकाल बहुत ही अमीरी में बड़े लाड़ प्यार से प्रारम्भ हुआ था; परन्तु उसके बाद बाल्यावस्था से ही जीवन के उतार चढ़ावों का कटु अनुभव देखने को मिला। लेकिन उन्होंने बड़ी हिम्मत के साथ कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए १५–१६ साल की उम्र में हाईस्कूल की परीक्षा पास की जो उन दिनों एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती थी। उन दिनों मथुरा के चौक बाजार में केवल आप ही हाईस्कूल पास थे और आसपास के सभी लोग आपसे चिट्ठी पढ़वाने या लिखवाने आया करते थे। जब वे कक्षा ६ में थे तभी पूज्य पिताजी असाध्य रोग से ग्रसित हो गये थे, जिसके कारण पढ़ाई के साथ-साथ दुकान तथा घर के कामकाज भी देखने पड़ते थे। हाईस्कूल पास करते ही उन्होंने अपनी सूत की दुकान पर टाइपिंग का काम भी बिना किसी संकोच के प्रारम्भ हुआ।

लम्बी बीमारी के बाद सन् १६४१ में पूज्य पिताजी के दिवंगत हो जाने के कारण श्री बंसीधर जी के ऊपर सभी भाई–बहिनों की शादी करने का तथा उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने का दायित्व भी आ पड़ा। इस दायित्व को भी श्री बंसीधरजी ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझकर अत्यन्त पुरूषार्थ के साथ पूर्ण किया। व्यापार तथा परिवार की सभी जिम्मेदारियों को श्री बंसीधर जी ने जीवन भर अत्यन्त त्यागपूर्वक, ईमानदारी से, स्नेह से, सादगी से, आत्मीयता से और अनुशासन से निभाया, जिसके फलस्वरूप उनके सभी भाई (१. श्री राधासरन जी २. श्री माधुरीसरन जी, ३. स्व० श्री हितसरन जी, ४. श्री किशोरीसरन जी ५. डा. ललित सरन जी) आज देश विदेश में अपने–अपने कारोबार को अत्यन्त सफलतापूर्वक चला रहे हैं और उनकी मत्युपर्यन्त श्री बंसीधरजी को पित तुल्य सम्मान प्रदान

अपने व्यक्तिगत परिवार को बंसीधरजी ने सुसंस्कारित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपके तीनों पुत्र श्री सुरेशचन्द्रजी, श्री दिनेशचन्द्रजी तथा श्री महेशचन्द्रजी भी अहमदाबाद तथा भोपाल में ख्यातिनाम व्यवसायों को चला रहे हैं। अपने कठोर तथा

समाजसेवा में भी किसी से पीछे नहीं रहे। आप वर्षों तक आर्यसमाज, चौक तथा विरजानन्द आश्रम, मथुरा के प्रधान रहे। देहरादून के सुप्रसिद्ध वैदिक साधना आश्रम, तपोवन के भी आप वर्षों तक प्रधान रहे। मथुरा में ही अपने पूज्य मामाजी के आर्थिक सहयोग से आपने बाबू शिवनाथ अग्रवाल डिग्री कालेज की स्थापना की, जो आज एक विशाल वटवक्ष के रूप में पुष्पित और पल्लवित हो रहा है। मथुरा की अन्य शिक्षण संस्थाओं में भी आप लम्बे समय तक अनेक पदों पर सुशोभित रह चुके हैं। अग्रवाल समाज तथा अन्य सभी समाजों के विविध सेवा कार्यों में आपका नेतत्वपूर्ण आर्थिक सहयोग आज भी अनवरत चालू है।

पुरातनकाल की कथाओं में दधीचि ऋषि की कथा आती है। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने आसुरों के वध के लिए प्रहरण बनाने हेतु अपनी अस्थियाँ इन्द्र को समर्पित की थीं। दधीचि के प्रवर्तमान रूप हैं श्री बंसीधरजी। जिस दिन आपने अपने जीवन के अस्सी वर्ष पूर्ण किये (१६६५ में), उसी दिन से ही आपने यह

कर दिया।

पूज्य पिताजी की लाइलाज बीमारी के कारण तथा सभी भाई–बहिनों में बड़े होने के कारण श्री बंसीधर जी के कन्धों पर पिताजी के इलाज का, उनकी सेवा सुश्रुषा का, सभी छोटे भाई–बहिनों को पढ़ाने लिखाने का तथा एक बड़े परिवार को चलाने का गुरुत्तर दायित्व किशोरावस्था में ही आ पड़ा। जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। स्कूल में पढ़ाई करते समय स्कूल के शिक्षकों के माध्यम से आपके अन्दर आर्यसमाज के संस्कार जागत हुए। किशोरावस्था में चित्त पर पड़े इन संस्कारों के कारण ही आपने सच्ची लगन से तन, मन लगाकर अपने पिताजी की वर्षो तक सेवा की और घोर आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद भी भाई–बहिनों की पढ़ाई–लिखाई चालू रखी। २२ वर्ष की उम्र में आपका विवाह (स्व०) श्रीमती रतनदेवी के साथ सम्पन्न करते रहे हैं।

संघर्षपूर्ण जीवन में श्री बंसीधर जी संकल्प किया कि मेरा यह शरीर जीते जी मेडीकल साइंस के छात्रों के लिए और जीवन–मरण के बीच फंसे हुए अल्प वयस्क रोगी–जनों के उपयोग के लिए समर्पित कर दूँ। दधीचि हाजिर है पर कोई इन्द्र नहीं है, जो उनके सजीव शरीर का दान ग्रहण करे। आपने अपने इस संकल्प को साकार करने हेतु देश के विविध उच्चासनाधीन अधिकारियों, नेताओं तथा समाज–सेवी डॉक्टरों से संपर्क किया। जब कहीं से अनुकूल प्रोत्साहन नहीं मिला, तब एकमात्र अन्तिम उपाय के रूप में सुप्रीमकोर्ट में विनंती–पत्र (रिट) भी दाखिल कराई। परन्तु वहाँ से भी संकल्प सिद्धि का द्वार नहीं खुला। भारतीय संविधान में कोई प्रावधान न होने से, आपका संकल्प सिद्ध नहीं हो पा रहा था। वे अन्त तक संविधान–संशोधन के लिए उपयुक्त प्रयत्न करते रहे। यह संकल्प सिद्ध हो या न हो, परन्तु कल्याण के लिए सर्वस्व बलिदान करने की आपकी भावना हम सभी के लिए स्तुत्य एवं प्रेरणाप्रद है।

आर्यजगत के दधीचि श्री बंसीधरजी अग्रवाल का
मरणोपरान्त चक्षुदान एवं देहदान

६३ वर्ष के सार्थक जीवन में वैदिक सिद्धान्तों के आराधक, श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के उपासक, सहजता और संयम के साथ समाज को सर्वश्रेष्ठ सेवाएं प्रदान करने वाले अहमदाबाद निवासी (मूल निवास स्थान-मथुरा) श्री बंसीधरजी अग्रवाल के पार्थिव शरीर को मरणोपरान्त दिनांक २२ दिसम्बर, २००७ को स्थानीय बी० जे० मैडीकल कालेज के अधिकारियों को मैडीकल साइन्स के विद्यार्थियों के अध्ययन एवं शोध हेतु अर्पित कर दिया गया। दिनांक २१ दिसम्बर, २००७ को सुबह ६.३० बजे निधन के पश्चात् उनका नेत्रदान किया गया और तदुपरान्त पूर्ण वैदिक अनुष्ठान के साथ ऋषि दधीचि के आदर्शो का पालन करते हुए उनके पार्थिव शरीर को परिवारी जनों द्वारा स्वर्गस्थ पुण्यात्मा की इच्छानुसार मैडीकल विद्यार्थियों के कल्याणार्थ मैडीकल कालेज को सौंप दिया गया।

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा गुजरात प्रदेश अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल के पिता श्री बंसीधर अग्रवाल एक सामाजिक संत, सेवा मनीषी तथा देवत्व की साक्षात प्रतिमूर्ति की तरह लोकप्रिय थे। उनका प्रेरक जीवन समाज के लिए सदैव मार्गदर्शक बना रहेगा।

गुजरात के राज्यपाल द्वारा सम्मानित

अहमदाबाद में ७ अक्टूबर, २००० को स्वामी दयानन्द विद्यार्थी आश्रम भवन के शिलान्यास समारोह में गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम श्री सुन्दरसिंह भंडारी द्वारा आपको सम्मानित किया गया था। इस अवसर पर आपकी समाज–सेवाओं को तथा मानव कल्याण हेतु सर्वस्व बलिदान करने की भावना को काफी सराहा गया। ❑

अखिल भारतीय हकीकतराय सेवा समिति के तत्वावधान में आर्यसमाज वाई ब्लाक सरोजनी नगर में
धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह आयोजित

रविवार १७ फरवरी, २००८

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह रविवार १७ फरवरी, २००८ को आर्यसमाज वाई ब्लाक, सरोजनी नगर नई दिल्ली में प्रातः ८.३० बजे से दोपहर १ बजे तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रातः ८.३० बजे यज्ञ, तदुपरान्त भजन एवं १० से १२ बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चों का विशेष कार्यक्रम, हकीकत राय नाटिका तथा अन्य स्कूल के बच्चों के भाषण–कविता आदि होंगे। इस अवसर पर १२ बजे से श्रद्धांजलि सभा होगी जिसमें उच्च कोटि के विद्वान व आर्यनेता पधार कर अपने विचार रखेंगे।

इस अवसर पर एक दिन पूर्व कक्षा पांचवी से १2वीं के बच्चों की कविता/भाषण प्रतियोगिता होगी, जिनमें विजाताओं को स्व० श्री रतनलाल सहदेव की स्मति में उनके सुपुत्र श्री अशोक सहदेव द्वारा इनाम दिए जाएंगे।

जिन विद्यालयों के छात्र/छात्राएं भाग लेना चाहें वे, महामन्त्री, अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति, आर्यसमाज सरोजनी नगर नई दिल्ली, दूभाष : २४६७७०६३ पर सम्पर्क करें।

— ***रोशनलाल गुप्ता, महामन्त्री***

— शेष पष्ठ ८ पर

पृष्ठ ३ का शेष

ईश्वर सर्वोत्तम है, ज्योति–स्वरूप है, दिव्य गुणों से युक्त है, हम भी उसके दिव्य गुणों को धारण कर प्रकाशमान हों। सूर्य उसी की ज्योति से प्रकाशित है, अनालस्यपूर्वक प्रतिदिन अपना प्रकाश विकीर्ण करता है, संसार को आलोकित करता है, अपनी तेजस्विता से, किरणों से वनस्पति- जगत और पेड़-पौधों को फलने-फूलने अनाजों के पकाने में सहायक बनता है। जड़ देवता होने के बावजूद 'सूर्य' में अनेक ईश्वरीय गुण हैं। सूर्य को देखकर हम दानी प्रकाशमान, समय का पाबन्द तेजस्वी आलस्यरहित बनने की प्रेरणा ले सकते हैं और इन ईश्वरीय गुणों को धारण करने का सतत प्रयत्न कर सकते हैं। 'उपस्थान' के पहले मंत्र के अनुसार परमेश्वर सुखस्वरूप है 'स्वः' है, हम भी संसार के सभी प्राणियों को सुखी बनाएं और किसी को दुःख न दें। दूसरों को सुख देने में ही हमारा सुख निहित है। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने भी इसी वेदानुकूल बात को कहा है–

औरों के हंसते देखो, मनु हंसों और सुख पाओ। अपने सुख को विस्तत कर लो, जग को सुखी बनाओ।।

(कामायनी)

यदि हम ब्रह्मानन्द को प्राप्त करना चाहते हैं, रसमग्न होना चाहते है। (रसो वै सः। रस ँह्येवा लब्ध्वी आनन्दी भवित) तो जगत् के समस्त प्राणियों को समदष्टि और निःस्वार्थ भाव से सुख पहुंचाने की चेष्टा करें।

'उपस्थान' के द्वितीय मंत्र के अनुसार वह परमात्मा 'जातवेदस्' है, वेदों का प्रकाशक है, उसी ने हमें वेदों का दिव्य ज्ञान दिया है और वेद की ऋचाएं उसी का भान कराती हैं। उस सर्वप्रकाशक, सर्वशक्तिमान, सर्वपालक प्रभु को 'सूर्य' के अभिधान से पुकारते हुए यह बतलाया गया कि वह चराचर जगत् की आत्मा है, सर्वव्यापक है और संसार के सभी पदार्थ झण्ड़ों के समान सर्वत्र उसी की उपस्थिति का भान कराते हैं। यह मंत्र हमें यह प्रेरणा देता है कि ईश्वर के समान हम भी परम ज्ञानी बनें, वेद–ज्ञान को प्राप्त कर अपने आचरण को वेदानुकूल बनायें और सदैव धर्म-मार्ग पर चलें। संसार का प्रत्येक पदार्थ चिल्ला-चिल्ला कर उसकी सत्ता का भान करा रहा है। हम उस सर्वव्यापक प्रभु को सर्वत्र देखें जगत् के कण–कण में उसी का साक्षात्कार करें और उसे एक क्षण के लिए भी न बिसरायें।

– शेष अगले अंक में

- डा० सुन्दरलाल कथूरिया

विश्व पुस्तक मेला प्रगति मैदान में

२ से १० फरवरी, २००८

आर्य प्रकाशन का स्टाल

हॉल नं. १२ए स्टाल नं. १६३

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी

२४वां वार्षिकोत्सव

७ से १० फरवरी, २००८

यजुर्वेद यज्ञ : प्रातः ७ से ६ बजे
ब्रह्मा : आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
वेदपाठ :गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी
भजन : श्री नरेन्द्र वशिष्ठ
वक्ता : डॉ० भवानीलाल भारतीय
विषय : स्वामी दयानन्द के मानव जति पर उपकार
भजन-प्रवचन : रात्रि ८ से ६.३० बजे

आर्य महिला सम्मेलन
८ फरवरी दोपहर २ से ५.३० बजे

समापन समारोह
१० फरवरी प्रातः १०.३० बजे से
अध्यक्ष : श्री बलदेव राज सेठ

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ाएं।

– कुलभूषण कुमार, प्रधान
ललित कुमार चौधरी, मन्त्री

पातजल योगधाम आर्यनगर हरिद्वार में

७३वां ध्यान योग शिविर

६ अप्रैल से १२ अप्रैल, २००८

शिविर शुल्क ५०/- रुपये

साधकों से निवेदन है कि फोन अथवा पत्र द्वारा अपना पंजीकरण करा लें।

– स्वामी चन्द्रानन्द सरस्वती, मन्त्री
दूरभाष : ०१३३४-२५४०३८

समाचार संशोधन : *साप्ताहिक आर्यसन्देश के २० जनवरी के अंक में प्रथम पष्ठ पर प्रकाशित विशाल भजन संध्या कार्यक्रम में गलती से आर्यसमाज मिण्टो रोड के मन्त्री के रूप में श्री सुरेशचन्द गुप्ता जी का नाम छप गया। कपया इसे सुधारकर श्री अरुण प्रकाश वर्मा पढ़ा जाए। भूल के लिए खेद है।*

– सम्पादक

"वैदिक प्रकाशन" की प्रस्तुति

आर्यजनता की भारी मांग पर पुनः निर्मित

ओ३म् स्टिकर

केवल मात्र 150/- सैंकड़ा

विक्रेताओं के लिए विशेष छूट

आज ही सभा कार्यालय को अपने आर्डर भेजें। डाक-व्यय अलग से देय होगा। सम्पर्क करें - २३३६०१५०, २३३६५६५६

Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

आर्य पर्वों की सूची - विक्रमी सम्वत् २०६४-६५ तदनुसार सन् २००८

क्र. सं.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिवस
१.	लोहड़ी	पौष शु० ५, वि. २०६४	१३/१/०८	रविवार
२.	मकर-संक्रान्ति	पौष शु० ७, वि. २०६४	१५/१/०८	मंगलवार
३.	वसन्त-पंचमी	माघ शु० ५, वि. २०६४	११/२/०८	सोमवार
४.	सीताष्टमी	फाल्गुन क० ८, वि. २०६४	२६/२/०८	शुक्रवार
५.	*ऋषि-पर्व* (महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव)	फाल्गुन क० १०, वि. २०६४	२/३/०८	रविवार
६.	*ज्योति-पर्व* शिवरात्रि (बोधोत्सव)	फाल्गुन क० १४, वि. २०६४	६/३/०८	गुरुवार
७.	लेखराम ततीया	फाल्गुन शु० ३, वि. २०६४	१०/३/०८	सोमवार
८.	*मिलन-पर्व* नवसस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. २०६४	२१/३/०८	शुक्रवार
९.	आर्यसमाज-स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/ नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/ गुड़ी पड़वा/चेती चांद	चैत्र शु० १, वि. २०६५	७/४/०८	सोमवार
१०	वैशाखी	चैत्र शु० ८, वि. २०६५	१३/४/०८	रविवार
१०.	रामनवमी	चैत्र शु० ९, वि. २०६५	१४/४/०८	सोमवार
१२.	हरि ततीया (हरियाली तीज)	श्रावण शु० ३, वि. २०६५	४/८/०८	सोमवार
१३.	*वेद-प्रचार समारोह* { श्रावणी उपाकर्म (रक्षा-बन्धन)	श्रावण पूर्णिमा, वि. २०६५	१६/८/०८	शनिवार
१४.	श्रीकष्ण-जन्माष्टमी	भाद्रपद क० ८, वि. २०६५	२४/८/०८	रविवार
१५.	विजयादशमी/दशहरा	आश्विन शु० १०, वि. २०६५	९/१०/०८	गुरुवार
१६.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी दिवस	आश्विन शु० १२, वि. २०६५	११/१०/०८	शनिवार
१७.	*क्षमा-पर्व* दीपावली (ऋषि-निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. २०६५	२८/१०/०८	मंगलवार
१८.	*बलिदान-पर्व* स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष क० ११, वि. २०६५	२३/१२/०८	मंगलवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है। भूलचूक सम्भव है; अतएव हमारी वैबसाइट www.delhisabha.com *से मिलान कर लें।*

— महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली- ११०००१

जिला वेद प्रचार मण्डल झज्जर के तत्वाधान में

स्व० माता धापादेवी की पुण्यतिथि पर यज्ञ

जिला वेद प्रचार मण्डल झज्जर के तत्वाधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में स्व माता धापा देवी की पुण्यतिथि पर यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. नारायण जी मुखर्जी ने कहा यज्ञ का प्रयोजन जलवायु को शुद्ध करने (भौतिक लाभों) की अपेक्षा आध्यात्मिक अधिक महत्वपूर्ण हैं। कार्यक्रम के मुख्यतिथि श्री प्रीत आर्य (गुरुकुल टटेसर) ने कहा कि आज हमारा समाज छिन्न–भिन्न हो चुका है, हजारों वर्षों की मानसिक, शारीरिक और राजनीतिक गुलामी इसको तोड़–फोड़ चुकी है, समाज अपनी मर्यादा को खो ही नहीं अपितु मूल ही भूल चुका है, बचा–खुचा भाग भी अब ढ़हने के कगार पर है। आज समाज में पाखण्ड, अन्धविश्वास, अज्ञानता चरमसीमा में है, लोग अपने पुत्र–पुत्रियों की बलि चढ़ा देते हैं। इसलिए हमें समपूर्ण समाज को ही श्रेष्ठ बनाना होगा, इसमें विलम्ब हम सभी के लिए घातक होगा।

आर्यसमाज बेरी के प्रधान श्री महेन्द्रसिंह जी, आर्यसमाज बादली के मंत्रीजी, रामकरणजी, आर्यसमाज खेड़ी आसरा के वरिष्ठ सदस्य श्री राजेन्द्र जी, श्री वी.के. नरूला, गार्गी जी, मंजू सैनी, बालेश्वर शास्त्री, रामेहर प्रचारी, सुश्री भावना राठी, जहाजगढ़ माजरा के वरिष्ठ सदस्य श्री चन्द्रपाल जी, श्री हरवीर जी, डी.पी.सी. श्री शिवनारायण, डॉ. आजाद, पं.जयभगवान, श्री जसवन्त आदि महानुभावों ने सभा को सम्बोधित किया तथा उन्हें सम्मानित किया गया।

– मुकेश आर्य, संयोजक

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) चलो

धार्मिक ऐतिहासिक एवं पर्वतीय स्थानों की बस यात्रा

(२ मार्च से १३ मार्च २००८)

दर्शनीय स्थल : अजमेर, पुष्करराज, जोधपुर, माउंट आबू, उदयपुर, जयपुर, चित्तौडगढ़, टंकारा, द्वारिका, बेट द्वारिका, पोरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर, राजकोट, अक्षरधारम मन्दिर, आगरा, वन्दावन तथा मथुरा।

किराया बस प्रति सवारी : २५००/- रुपये । यात्रा कार्यक्रम : २ मार्च : रात्रि ६ बजे आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय गुड़गांव से प्रस्थान। अजमेर, जोधपुर, माउंट आबू होते हुए ५ मार्च को टंकारा। **५ व ६ मार्च टंकारा में।** ७ मार्च : प्रातः ५ बजे टंकारा से द्वारिका, बेट द्वारिका, पोरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर, राजकोट, गांधीनगर, अक्षरधाम मन्दिर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, जयपुर, आगरा, मथुरा, वन्दावन होते हुए १३ मार्च, २००८ को रात्रि गुड़गावं पहुंचेंगे।

विशेष : सीट बुक कराने से पहले कार्यक्रम ध्यान से पढ़ लें।

१. मौसम के अनुसार विस्तर, पानी की बोतल एवं टार्च आदि साथ लायें।

२. शीघ्र से शीघ्र अपनी सीट बुक करवा लें। आधी सवारी को सीट नहीं मिलेगी। राशि जमा होने के बाद वापिस नहीं होगी। कार्यक्रम में परिवर्तन करने एवं सीट नंबर देने का अधिकार प्रबन्धक को होगा। यात्री समय का विशेष ध्यान रखें।

नोटः निवास एवं भोजन की व्यवस्था आर्य समाजों में होगी, यदि कही ऐसा नहीं हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेंगे।

यात्रा प्रबन्धक : सोमनाथ

प्रधान, आर्यसमाज अर्जुन नगर, गुड़गांव २३२७३४४, ९८११७६२३६४, २३०४८७३

गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) का

चालीसवां वार्षिक महोत्सव आयोजित

गुरुकुल आश्रम आमसेना का ४०वाँ वार्षिक उत्सव ९, १०, ११ फरवरी, २००८ को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर अनेक विद्वान, भजनोपदेशक एवं राजनेता पधार रहे हैं।

दो त्यागी, तपस्वी, कर्मठ संन्यासियों एवं एक विदुषी का सम्मान

७ फरवरी को हरियाणा के प्रसिद्ध

समस्त आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर आयोजन की शोभा बढ़ाएं।

– चौ. मित्रसेन आर्य, प्रधान

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, संचालक

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग तत्वावधान मे

वैदिक धर्म प्रचार शिवर माघ मेला २००८

आर्य समाज अंधेरी (प.), मुम्बई का

२१वाँ वार्षिक समारोह सम्पन्न

आर्य समाज अंधेरी (प.), मुम्बई का २१ वाँ वार्षिक समारोह २७ से ३० दिसम्बर २००७ को २१ कुण्डीय, चतुर्वेद शतक महायज्ञ, विश्वशान्ति एवं पर्यावरण शुद्धि को लक्ष्य कर दीप ज्योति प्रज्जवलित कर आरम्भ किया गया। उत्साह पूर्ण वातावरण में सांसद तथा सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री प्रवचन हुए। ३० दिसम्बर, २००७ को प्रातः ७.०० से १०.०० बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी।

पूर्णाहुति के पश्चात आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी मेधानन्द सरस्वती का महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर (राजस्थान) की ओर से न्यास के अध्यक्ष कै०

प्रचारक एवं भजनोपदेशक स्व० चौ० शीशराम आर्य की पुण्य स्मति है। वे आर्य समाज के दीवाने प्रचारक और चौ० मित्रसेन आर्य के पूज्य पिताजी थे। वे त्यागी, तपस्वी, महात्मा और देशभक्तों का बहुत सम्मान करते थे। उन्हीं की भावना के अनुकूल परपमित्र मानव निर्माण संस्थान रोहतक के सौजन्य से आर्यसमाज के दो कर्मठ त्यागी, संन्यासी और एक विदुषी का सम्मान १५–१५ हजार रूपये की थैली, शाल, श्रीफल और अभिनन्दन पत्र के साथ १० फरवरी को किया जायेगा।

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ

गुरूकुल महोत्सव के शुभ अवसर पर ज्ञानकाण्ड प्रधान अग्नि महर्षि दष्ट पारायण महायज्ञ ७ फरवरी से शुरू होगा। इसकी पूर्णाहुति ११ फरवरी को प्रातःकाल १० बजे होगी।

गुरुकुल सम्मेलन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरूकुल सम्मेलन में ब्रह्मचारी एवं कन्या गुरूकुल की ब्रह्मचारीणियां भव्य आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन १० फरवरी को सायंकाल होगा।

निर्वाचन समचार
आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-२, नई दिल्ली-४८

प्रधान : श्री वीरेन्द्र तलवाड़
मन्त्री : श्री प्रियव्रत आर्य
कोषाध्यक्षः श्री वी० के० गाबा

१४ जनवरी से ११ फरवरी, ०८

शिविर स्थल : काली सड़क उत्तरी भूखण्ड संख्या १ अ एवं १ ब (पुल के पास) प्रयाग (इलाहाबाद)

चतुर्वेद शतकम एवं नित्य पंच महायज्ञ मेले का उद्घाटन मकर संक्रान्ति १४ जनवरी, ०८ को हुआ और यह ११ फरवरी – बसन्त पंचमी तक चलेगा। इस शिविर में समस्त धर्मबन्धु सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

– आर्य राजेन्द्र कपूर, मन्त्री

धर्मेन्द्रजी ने सपत्नीक विद्वानों, वेदपाठी, कन्याओं की उपस्थिति में वेदों के मंत्रोचारण के साथ आर्य समाज के समस्त सक्रिय कार्यकर्ताओं, और सैकड़ों यज्ञप्रेमी यजमानों की उपस्थिति में यज्ञ किया। यह २१ कुण्डीय महायज्ञ प्रातः ७.०० बजे २७ दिसम्बर, २००७ को आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में गुरूकुल चोटीपुरा की कन्याओं के वेदपाठ के साथ आरम्भ हुआ। प्रातः ७.०० बजे से ६.३० यज्ञ, श्री नरेन्द्र वशिष्ठ के भजन, आचार्य अखिलेश्वर जी के देवरत्न आर्य ने स्वामी जी के अभिनन्दन करने का आयोजन करवाया।

स्वामी मेधानन्द जी को सम्मान स्वरूप अभिनन्दन पत्र स्मतिचिन्ह (शील्ड), शाल, श्रीफल तथा राजस्थानी पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर २१०००/– का ड्राफ्ट भी न्यास की ओर से भेंट किया गया। जिसे स्वामी जी ने पुनः न्यास की प्रगति कार्यो के लिए उन्हें ही समर्पित कर दिया। मुम्बई की समस्त आर्य समाजों के गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामीजी का पुष्प मालाओं से स्वागत किया।

इस अवसर पर मुम्बई की समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। पूर्व गह राज्यमंत्री श्री कपासिंह, विधायक श्री, बलदेव खोसा आचार्य अखिलेश्वर जी तथा प्रखर वक्ता श्री धर्मबन्धुओं ने स्वामी श्रद्धानंद जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

– हरीश आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज सागरपुर व दिल्ली सभा द्वारा
तिहाड़ बन्दीगह में पूर्णमासी पर यज्ञ सम्पन्न

पूर्व कार्यक्रमानुसार जनवरी २००८ की 'पूर्णिमा' पर मंगलवार दिनांक २२ जनवरी की प्रातः तिहाड़जेल के गेट नं.३ से प्रवेश पाकर जेल नं०५ पहुंचे। आर्यसमाज सागरपुर की ओर से श्री जयसिंह वर्मा–प्रधान, श्री राकेश कुमार उपमंत्री, श्री हरीसिंह आर्य, उपमंत्री, श्री हरीसिंह (टोपीवाले), श्री फूलसिंह आर्य, वरिष्ठ उप प्रधान श्री राजेन्द्र सिंह, श्रीमती विद्यावती आर्य, श्रीमती पुष्पावती आर्या, मंत्राणी, श्रीमती मीरा यादव व श्रीमती प्रवेश आर्या के साथ–साथ यज्ञ संयोजक श्री ओ०पी० भटनागर, श्री विपुल रस्तोगी व 'अरमान' सामाजिक संस्था की महासचिव श्रीमती नीरू आर्या उपस्थित रहे। यज्ञ की व्यवस्था उपरान्त देवयज्ञ श्री हरीसिंह आर्य के निर्देशन में कराया गया। उन्होंने अपने आर्शीवचनों के साथ उपस्थित युवक बन्दियों को श्रेष्ठ नागरिक बनने की प्रेरणा देते हुए संकल्प कराया कि भविष्य में यहां से रिहाई के उपरान्त किसी अपराध अथवा गलत कार्यो से दूर रहेंगे। श्रीमति विद्यावती जी आर्या द्वारा देशभक्ति के गीत सुनाए गये तथा *''पहले हम अपना सुधार करें''* के गीत ने सभी को भाव–विभोर कर दिया। युवक बन्दियों द्वारा रामायण के प्रसंग सुनाकर प्रसन्नचित्त किया। श्री हरीसिंह द्वारा ईश्वर भजन सुनाया गया।

श्री विपुल रस्तौगी (लक्ष्मी नगर) ने आर्य डॉ० ओ०पी० भटनागर के परामर्श पर बन्दियों को साबुन तेल के पाउच दान देने हेतु ५००/– रुपये का सहयोग दिया।

श्रीमती नीरु आर्या दिसम्बर, ०७ के अन्तिम सप्ताह में गोवा जेल में युवा बन्दियों के मार्ग दर्शन हेतु गई थीं। अन्त में प्रधान श्री जयसिंह वर्मा द्वारा उपस्थित सभी सदस्यों का आभार प्रकट करते हुए सभी का धन्यवाद किया। श्री ओ०पी० भटनागर व श्रीमति नीरू आर्या द्वारा आर्यसमाज सागरपुर का धन्यवाद करते हुए भविष्य में सहयोग करते रहने का अनुरोध किया।

– डॉ० ओमप्रकाश भटनागर,
यज्ञ संयोजक

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ३१–१/०१–०२–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का
डच भाषा में अनुवाद सम्पन्न

महर्षि स्वामी दयानन्द जी की अमर कति सत्यार्थ प्रकाश विश्व के अधिसंख्य लोगों तक पहुंच सके, इस उद्देश्य से हॉलेंड की आर्य प्रतिनिधि सभा के सक्रिय अधिकारी पं० डॉ० सूर्य प्रसाद बीरे जी के अथक प्रयासों से इसका डच भाषा में अनुवाद होकर ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

विमोचन समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैंड के अध्यक्ष श्री सुरेन महाबलि और हिन्दू परिषद् नीदरलैंड के अध्यक्ष डॉ० अमरीश बलदेव प्रसाद तिवारी जी द्वारा किया गया। इसी के साथ "हेग" में स्थित आर्यसमाज नीदरलैंड के तत्वावधान में सत्यार्थ प्रकाश का शिक्षण और प्रशिक्षण का कार्य आरम्भ किया गया है, जिसमें युवा वर्ग काफी संख्या में रूचि ले रहा है। शीघ्र ही नीदरलैंड के अन्य नगरों में स्थित आर्यसमाजों में सत्यार्थ प्रकाश का अध्यापन आरम्भ होने वाला है। पं० सूर्य प्रसाद बीरे जी ने बताया कि हम डच भाषा में शीघ्र ही युवा, बाल और शिक्षकों के लिए संस्करण तैयार करने जा रहे हैं। *(ईमेल से प्राप्त सूचना)*

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वार्षिक बैठक सम्पन्न

दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वार्षिक बैठक सम्मेलन के अध्यक्ष पूर्व महापौर श्री महेश चन्द्र शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें साहित्यश्री सम्मान समारोह दिनांक ८ फरवरी, २००८ को हिन्दी भवन में आयोजित करने का निर्णय किया गया है। इसमें हर दो वरिष्ठ साहित्यकारों, एवं सुप्रसिद्ध कवि, एक हिन्दीत्तर भाषी हिन्दी साहित्यकार, एक हिन्दी पत्रकार, एक राष्ट्रीय चेतना के संवाहक के रूप में किसी गीतकार को तथा एक हिन्दी सेवी को साहित्यश्री सम्मान से सम्मानित किया जाता है। सदैव की भांति सम्मान प्रदान करने के लिए दिल्ली के उपराज्यपाल महामहिम तेजेन्द्र खन्ना जी से अनुरोध किया है। श्री महेश चन्द्र शर्मा ने यह बताया कि इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा।

— नवीन कुमार झा, कार्यालय सहायक

द्वारका क्षेत्र में आर्यसमाज की स्थापना के लिए गतिविधियां आरम्भ

रविवार दिनांक २० जनवरी, ०८ को श्री प्रेम बत्रा जी के द्वारका स्थित निवास पर द्वारका के प्रमुख आर्यजनों की एक बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें द्वारका में आर्यसमाज की स्थापना के सम्बन्ध में आवश्यक चर्चाएं की गई। मुख्य रूप से द्वारका क्षेत्र में आर्यसमाज के गठन, उसके लिए भूमि सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करना तथा द्वारका में रहने वाले अन्य आर्यजनों से सम्पर्क बनाने सम्बन्धी चर्चाएं हुई। इस बैठक में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्यसमाज सी–३, जनकपुरी के प्रधान श्री रामकष्ण सतीजा, उप प्रधान श्री रमेश आर्य, मुख्य रूप से उपस्थित थे। बैठक के आयोजन तथा द्वारका क्षेत्र के आर्यजनों को एकत्र करने में पं० जीवन प्रकाश शास्त्री एवं पं० प्रणव देव आर्य का विशेष योगदान रहा।

बैठक में चर्चा उपरान्त यह निर्णय लिया गया कि शीघ्र उन आर्य महानुभावों से सम्पर्क अभियान शुरु किया जाए, इसके लिए ***श्रीमती अंजू नागपाल जी मो० : 9868881274*** को संयोजक का कार्यभार सौंपा गया। **अगली बैठक रविवार २४ फरवरी, २००८ को प्रातः ११ बजे यज्ञ के साथ आयोजित की गई है। बैठक श्री राजीव पुरी जी के निवास स्थान सी- १०६, प्रभा अपार्टमैंट, प्लाट नं. ११, सैक्टर- २३, द्वारका, नई दिल्ली- ११००७५, मो०: 9810066177** पर रखी गई है।

हम सभी पाठकों से निवेदन करते हैं कि जिनके परिचित, जानकार, रिश्तेदार द्वारका क्षेत्र में रहते हों उनके नाम संयोजक को लिखवा दें तथा उन्हें इस बैठक के विषय में जानकारी अवश्य देवें तथा बैठक में सम्मिलित होने के लिए प्रेरणा प्रदान कर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में योगदान दें। — ***महामन्त्री***

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट-३६३६५६ (गुजरात) दूरभाषः (०२८२२) २८७७५६

ऋषि बोधोत्सव का निमंत्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन ५, ६, ७ मार्च २००८ (बुधवार से शुक्रवार) को ऋषि जन्मस्थली टंकारा में समारोहपूर्वक आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कपा करें।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ : २८ फरवरी से ६ मार्च २००८

ब्रह्मा : आचार्य विद्यादेव/रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री बज मोहन मुंजाल *(प्रबन्ध निदेशक हीरो ग्रुप इण्डस्ट्रीज)*

बोधोत्सव : ६ मार्च, २००८ दोपहर ३ बजे से ५ बजे तक

मुख्य अतिथि : माननीय श्री भैरोसिंह शेखावत *(पूर्व उपराष्ट्रपति, भारत सरकार)*

विशिष्ट अतिथिः पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा *(प्रधान, डी.ए.वी.)*, श्री राधेश्याम शर्मा *(उपप्रधान डी.ए.वी.)*

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में हो रहे कार्यो हेतु एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चैक/ड्राप्ट/मनीऑर्डर द्वारा *''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''* के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज *''अनारकली'' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१* अथवा *''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा'', जिला राजकोट-३६३६५० (गुजरात)* के पते पर भिजवा कर पुण्यार्जन करें।

आपसे अनुरोध है कि आप अपनी आर्य समाज, शिक्षण संस्था तथा सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भिजवाएं और आप स्वयं भी कम से कम रू० ५१००/- तो अवश्य भेजें और यदि हो सके तो इससे अधिक राशि भेजने की कपा करें और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का विस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय को अवश्य देवें, जिससे व्यवस्था बनाई जा सके। **नोट : टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल *(मैंनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)* **शान्ति प्रकाश बहल** *(कार्यकारी प्रधान)* ~~रामनाथ सहगल~~ *(मंत्री)*

उपकार्यालय : आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ २३३६२११०, २३३६००५६ टैलीफैक्स : ४१५५२११६

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**